पढ़ने के प्रारम्भिक कौशलों को सिखाना

रिया बाजेली

भूमिका

पढ़ना सीखने की प्रक्रिया के बारे में अनेक अध्ययन तथा प्रकाशित पुस्तकें उपलब्ध हैं। पर, उनमें इस्तेमाल की जाने वाली भाषा का एक मतलब यह होता है कि केवल प्रारम्भिक वर्षों पर काम करने वाले पेशेवर लोगों की ही ऐसे ज्ञान तक पहुँच हो सकती है, जबकि वास्तव में बच्चों को सफल पढ़ने वाले बनने के लिए तैयार करने में अनेक व्यक्ति शामिल रहते हैं, चाहे वे यह जानते हों या नहीं।

शिक्षण के अपने कार्यकाल के दौरान एक समय मेरे स्कूल में प्रारम्भिक वर्षों की शिक्षा की जिम्मेदारी मेरे ऊपर थी और मैं प्रवेशिका–प्रथम वर्ष की कक्षा को पढ़ा रही थी। उस समय मैं एक ऐसे प्रधान शिक्षक की सहायक भी थी जिन्हें बहुत छोटे बच्चों के पढ़ाने का कोई अनुभव नहीं था। मुझे याद है कि हमारे साथ काम करना आरम्भ करने के थोड़े समय बाद ही उन्होंने मुझसे पूछा, 'छोटे बच्चे पढ़ना कैसे सीखते हैं?' मैं किसी प्रकार उन्हें यह समझाने में सफल हुई। अन्त में उन्होंने कहा, 'मेरा ख्याल है कि यदि माता–पिता यह सुन सकें तो वह काफी उपयोगी होगा।'

इसके परिणामस्वरूप हम एक वार्षिक 'पढ़ने की बैठक' विशेष रूप से उन माता–पिताओं के लिए आयोजित करने लगे जिनके बच्चों ने पहली बार स्कूल आना शुरू ही किया था। जैसे–जैसे वर्ष बीतते गए इन बैठकों में मेरा प्रस्तुतिकरण थोड़ा बदल गया, क्योंकि सिर्फ नवागत कक्षा के बच्चों के माता–पिता ही इन बैठकों में शामिल होना नहीं चाहते थे, बल्कि उन बच्चों के भी माता–पिता शामिल होना चाहते थे जो स्कूल की आगे की कक्षाओं में थे। उनसे मिलने वाली प्रतिक्रिया अत्यन्त सकारात्मक थी। अनेक माता–पिता साल दर साल इन बैठकों में आते रहे। उन्हें वह रोचक, समझने में आसान तथा प्रेरक लगता था, क्योंकि उन्हें इस बारे में स्पष्ट विचार दिए जाते थे कि उनके बच्चों के पढ़ना आरम्भ करने में मदद करने के लिए और एकबारगी बच्चों के स्वतंत्र पढ़ने वाले बन जाने के बाद उनको सहारा देने के लिए वे क्या कर सकते थे।

जन्म से लेकर स्वतंत्र रूप से पढ़ने की अवस्था तक पढ़ने के कौशलों को विकसित करने के लिए यहाँ दी जा रही सलाह, इन्हीं बैठकों की सामग्री का संकलन है। मैं आशा करती हूँ कि यह इस तरह लिखा गया है कि हर उस व्यक्ति को, जो बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार करने में सहायता करने की कोशिश कर रहा है (जैसे कि माता–पिता, परिवार के सदस्य, नर्सरी में काम करने वाले, शिक्षण सहायक और साथ ही शिक्षक) यह समझने में आसान, तर्कपूर्ण और उपयोगी लगेगा।

पढ़ने के लिए आवश्यक कौशलों (पढ़ने के पूर्व–कौशलों) को बढ़ावा देना

प्रारम्भिक भाषा कौशल

जब कोई बच्चा पैदा होता है तो उसे प्रेम, पोषण और चाहत तथा सुरक्षित होने के बोध की जरूरत होती है। शिशुओं तथा बहुत छोटे बच्चों की देखभाल में संलग्न लोग इन सभी चीजों को प्रदान करने का भरसक प्रयास करते हैं, चाहे उनकी परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन हों और चाहे वे संसार में कहीं भी हों।

जो परिवार अपने बच्चों से कोमल स्वर में और स्नेहपूर्वक बात करते हैं, उनकी आँखों से आँखें मिलाते हैं और प्रसन्न मुखमुद्राओं का उपयोग करते हैं, वे शिशुओं को सिखा रहे होते हैं कि सम्प्रेषण आसपास के संसार से पारस्परिक क्रियाकलाप का एक सुखद और उपयोगी साधन है।

ये वे पहली महत्त्वपूर्ण बातें हैं जिन्हें अपने प्रिय लोगों से जुड़ने के लिए सीखने की एक बच्चे को आवश्यकता होती है। उपयुक्त भाषा का उपयोग करते हुए सम्प्रेषण करने की योग्यता के बिना पढ़ना असम्भव और अर्थहीन होगा।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में, गीत, तुकान्त कविताएँ(राइम्स) और धुनें, ये सभी पढ़ने के लिए कौशलों को निर्मित करने में उपयोगी होते हैं। शैशव की पारम्परिक तुकान्त कविताओं की प्रकृति एक ऐसे माध्यम की होती है जिसके द्वारा छोटे बच्चे समान ध्वनियाँ सुनते हैं। इन कविताओं को याद करने में वे ऐसे श्रवण कौशल निर्मित करते हैं जो भविष्य में ध्वनि–आधारित सीखने में उनकी मदद करेंगे। मेरे अनुभव में, जो बच्चे ऐसी कविताओं से अपरिचित होते हैं, उनकी अपेक्षा अकसर वे बच्चे ज्यादा जल्दी पढ़ना सीखते हैं जो ऐसी कविताओं से स्कूल आने के पहले से परिचित होते हैं।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था का एक अन्य नितान्त आवश्यक अंग खेल है। खेल उन तरीकों में से एक है जिनसे बच्चे आपस में मिलते–जुलते हैं और विभिन्न पात्रों का स्वांग करने में संलग्न रहते हैं। इन स्थितियों में जो भाषा विकसित होती है, वह बातचीत का अनुभव निर्मित करती है।

सभी छोटे बच्चों को रंग–बिरंगी तस्वीरें बहुत अच्छी लगती हैं। किसी चित्र को देखकर मुग्ध हुए बच्चे से बात करने जैसा सुखद अनुभव बहुत कम होता है। बच्चे के बोलना शुरू करने से भी पहले उससे किसी चित्र के भागों के बारे में बात की जा सकती है और बच्चा उसको समझेगा। अकसर वह सुने हुए शब्दों को दोहराने तथा उन भागों की ओर इशारा करने की कोशिश भी करेगा। चित्रों की व्याख्या करना, पढ़ने के प्रारम्भिक संकेतों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जब बच्चे बहुत छोटे होते हैं, तब पढ़ने के पूर्व–अनुभवों का नितान्त आवश्यक अंग कहानियाँ होती हैं। जो बच्चे परिवार के भीतर किताबों का अनुभव करते हैं, वे यह सीखते हैं कि किस प्रकार एक किताब में तस्वीरें और पाठ मिलकर एक कहानी बयान करते हैं। वे ध्यान केन्द्रित करने और सुनने का ढंग सीखते हैं, क्योंकि कहानियाँ आनन्ददायक होती हैं और बच्चों को आनन्द प्रिय होता है। वे आगे की घटनाओं की बात करने के कौशल सीखते हैं और क्रमिक वर्णन तथा पुनरुक्ति का अनुभव प्राप्त करते हैं।

कभी–कभी मेरे पास प्रवेशिका कक्षा के विद्यार्थियों का कोई चुनौतीपूर्ण समूह होता था। ऐसा तब होता था जब कुछ बच्चे जो कहानियों के बारे में नहीं जानते थे या सुनने का तरीका जाने बगैर स्कूल आ जाते थे। मैंने पाया कि ऐसे में बिना किताब के कहानी सुनाने से, या केवल तस्वीरों का इस्तेमाल करने से मैं बच्चों के साथ आँखों का सम्पर्क बनाए रखने में कामयाब रहती थी। बहुत से हाव–भाव, हास्यमय चेहरे और यहाँ तक कि गाने भी उनकी दिलचस्पी बनाए रखते हैं और इनसे उनके ध्यान केन्द्रित करने के कौशलों को निर्मित करने में मदद मिली।

आनन्द का महत्त्व

पढ़ने के पूर्व की सभी गतिविधियों का बच्चों के लिए आनन्ददायक होना बहुत जरूरी है। हम जिन मौखिक और व्यावहारिक अनुभवों को बच्चों के लिए सुगम बनाने में उनकी मदद करते हैं, उन सभी से जुड़ा आनन्द पढ़ने के कौशलों को हासिल करने के लिए सकारात्मक और मजबूत आधार प्रदान करेगा।

बच्चे आमतौर पर आसानी से और सहज रूप से हँसते हैं। यदि वे तब ऐसा करते हैं जब वे किन्हीं पढ़ने से पूर्व की गतिविधियों में लगे हों तो हमें बहुत खुश होना चाहिए। मैंने हमेशा कहा है कि आप जितना अधिक आनन्द पैदा कर सकते हैं, सीखना भी उतना ही बेहतर होगा!

विकासात्मक मुद्दों के प्रति सचेत रहना

जैसा कि सभी माता–पिता और शिक्षक जानते हैं, भावनात्मक और शारीरिक, दोनों प्रकार से बच्चे अलग–अलग रफ्तार से बढ़ते हैं।

मेरे अनुभव के अनुसार केवल यही सामान्यीकरण सम्भव है कि छोटे लड़कों की तुलना में छोटी लड़कियाँ अकसर जल्दी पढ़ने के लिए तैयार हो जाती हैं। परन्तु, इसके अपवाद हमेशा मिलते हैं।

लड़कियों तथा लड़कों के बीच भावनात्मक और शारीरिक विकास के भेदों में लगभग 6 माह या उससे थोड़ा अधिक अन्तर हो सकता है।

यहाँ एक सावधानी बरतने का उल्लेख करना बहुत जरूरी है। यदि किसी बच्चे के पढ़ने के लिए तैयार होने के पहले यदि उसे पढ़ने की किसी औपचारिक स्थिति में ठेला जाता है तो वह सफलता के आनन्द का अनुभव नहीं करेगा। इसमें यह वास्तविक खतरा है कि वह इस महत्त्वपूर्ण कौशल को सीखने की प्रक्रिया के साथ असफलता और हताशा के भावों को जोड़ लेगा।

मैं यहाँ अपने एक विद्यार्थी का उदाहरण देती हूँ।

वह मेरी प्रवेशिका कक्षा में केवल 4 साल की उम्र में आया था। वह बहुत छोटा, अपरिपक्व, मीठे स्वभाव वाला लड़का था। उसे खिलौना बनाने वाली सामग्री से खेलना और खेल घर में पोशाकें पहनकर पात्रों के स्वांग करना बहुत अच्छा लगता था। स्कूल के पूरे पहले साल में उसका सारा सीखना पढ़ने के पूर्व की गतिविधियों पर आधारित था। वह खुश रहता था और उसका आत्मविश्वास बढ़ा था। जब वह अगले वर्ष के लिए स्कूल लौटा, तो वह पढ़ने के लिए तैयार था और उसने लगभग तुरन्त ही बहुत अच्छी शुरुआत की। प्राथमिक शिक्षा पूरी करके जाने तक, वह अच्छा औसत आत्मविश्वास वाला और काम के प्रति बहुत बढिया रवैया रखने वाला विद्यार्थी बन गया था। उसके अन्तिम वर्ष में उसने हमारी एक बड़ी नाट्य प्रस्तुति की प्रमुख भूमिकाओं में से एक को निभाया। उसने हाईस्कूल में भी बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और उसके बाद वह एक बहुत प्रतिष्ठित कालेज में गया। मुझे अकसर ख्याल आता है कि यदि शुरुआत में उसे एक साल पहले ही जल्दबाजी करते हुए औपचारिक पढ़ने में ठेल दिया गया होता तो शायद उसका आगे का जीवन भिन्न प्रकार से घटित हुआ होता।

शारीरिक विकास

शारीरिक विकास का सम्बन्ध हाथों–आँखों के संयोजन से होता है और इसका प्रारम्भिक वर्ष की शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा होना बहुत जरूरी है। हाथों तथा आँखों के अच्छे संयोजन के बिना कोई बच्चा सफलतापूर्वक लिख नहीं सकेगा। ध्वनि–आधारित सीखने तथा हिज्जे करने को सशक्त बनाने के लिए लिखने की प्रारम्भिक गतिविधियों का उपयोग किया जा सकता है।

सभी छोटे बच्चों को शारीरिक गतिविधि अच्छी लगती है और वे निरन्तर अपने लिए शारीरिक चुनौतियाँ रचते रहते

हैं। जब वे बहुत छोटे होते हैं तब उनको शारीरिक कौशलों को आजमाने और पक्का करने के द्वारा अपनी योग्यताओं का विस्तार करने की कोशिश करते हुए देखा जा सकता है, उदाहरण के लिए : बार–बार पलटी खाना, चीजों को यह देखने के लिए फेंकना कि वे कितनी दूर जाती हैं। बच्चों के मुक्त खेल में काफी सहज ढंग से ऐसी अनेक गतिविधियाँ देखी जाती हैं।

जब बच्चे स्कूल के वातावरण में प्रवेश करते हैं, तब भी अपने शारीरिक कौशलों को विकसित करना जारी रखने के लिए उन्हें दिन के खासे हिस्से में खेल सकने की जरूरत होती है। ज्यादा व्यवस्थित शारीरिक सीखना तब स्पष्ट दिखाई देता है जब वे अपने साथियों के साथ सामूहिक शारीरिक गतिविधियों का आनन्द लेने लगते हैं। ऐसा बहुत कुछ उनके खेल में साफ दिखाई देता रहता है, उदाहरण के लिए : किसी बीम या शाखा पर सन्तुलन बनाए रखते हुए चलना, सभी गेंद के खेल, तुकान्त कविताओं के साथ ताली बजाने वाले खेल, सभी प्रकार का नृत्य, लाँघना, तैरना और साइकिल या स्कूटर की सवारी करना।

कुछ कुछ बनाने की गतिविधियाँ

बच्चों को सफलतापूर्वक पढ़ना सीखने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे आकारों की कल्पना करने और उनको याद रखने की योग्यता विकसित कर चुके हों। आखिरकार, शब्द भी पेज पर बनी हुई संरचनाएँ ही हैं, जिनमें से अधिकांश को उनके सभी अंगों के ध्वन्यात्मक अर्थों को जानने के द्वारा समझा जा सकता है। हालाँकि, बहुत से ऐसे शब्द भी होते हैं जिनके अर्थ को इस तरह नहीं खोला जा सकता। ऐसे शब्दों के 'आकार' को सीखना पड़ता है।

छोटे बच्चों के लिए निर्माण की विभिन्न तकनीकों का इस्तेमाल करके आकारों और संरचनाओं को रचने के अवसर के द्वारा द्वि और त्रि–आयामी आकारों की कल्पना करने की उनकी क्षमता बहुत बढ़ जाती है। लकड़ी के साधारण टुकड़े (ब्लाक) अकसर उनके मनपसन्द होते हैं और उन्हें अद्‌भुत संरचनाओं में रूपान्तरित किया जा सकता है! वे एक रेलगाड़ी, पुल, किला, महल, ट्रैक्टर, कार, मकान, पलंग – यह सूची अन्तहीन है – सभी कुछ बन सकते हैं। प्रत्येक रूपान्तरण में बच्चे निर्मित किए जाने वाले आकारों का स्मरण करते हैं और फिर इन टुकड़ों को, उनकी धारणा के अनुसार, मिलते–जुलते आकारों में जमाते हैं। ऐसे सारे प्रयासों को मूल्यवान जानकर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संरचनाओं को निर्मित करना

अलग–अलग अक्षर पेज पर बनी हुई संरचनाएँ होती हैं और शब्द अन्य संरचनाओं से बनी संरचनाएँ होते हैं!

बच्चों से लिखित शब्दों की जटिल 'संरचनाओं' का वर्णन करने के लिए कहने से पहले उन्हें संरचनाएँ निर्मित करने के अनुभव की आवश्यकता होती है।

छोटे बच्चों को संरचनाओं का क्रम अच्छा लगता है। छोटे बच्चों के किसी समूह का संरचना की अवधारणा से परिचय कराने का एक व्यावहारिक तरीका उन्हें लड़का, लड़की, लड़का, लड़की आदि की एक सरल पंक्ति में व्यवस्थित करना है। छोटे बच्चों को यह रोमांचक लगेगा क्योंकि जब वे संरचनाओं को समझने लगेंगे तो वे पहले से बता सकते हैं कि आगे क्या आएगा।

संरचना की धारणा के माध्यम से अनेक आश्चर्यजनक गतिविधियाँ की जा सकती हैं। डण्डियों और पत्तियों जैसी त्रि–आयामी वस्तुएँ आमतौर पर आसानी से उपलब्ध रहती हैं और संरचनाएँ बनाने के लिए उनका अच्छा उपयोग किया जा सकता है। एक सरल संरचना (एक पत्ती,एक डण्डी,एक पत्ती इत्यादि) बाद में ज्यादा जटिल संयोजनों – जैसे कि 2 पत्तियाँ, 3 डण्डियाँ, 2 पत्तियाँ, 3 डण्डियाँ, इत्यादि – में विकसित की जा सकती है। धागा पिरोने के गुरिए, एक के ऊपर एक ढेरी बनाने के ब्लाक, दरअसल में संरचना का खेल शुरू करने के लिए किसी भी चीज का इस्तेमाल किया जा सकता है।

विभिन्न संरचनाएँ बनाने के लिए त्रि–आयामी वस्तुओं से खेलने के बाद, आमतौर पर बच्चे द्वि–आयामी संरचनाएँ बनाने के लिए तैयार हो चुकते हैं। सब्जियों की संरचनाओं को कागज पर छापना, छोटे बच्चों के लिए एक रोमांचक और लोकप्रिय गतिविधि होती है। मैं भिन्न–भिन्न रंगों वाले तरह–तरह के कागजों को 'पेड़ों' की संरचनाओं में काट लेती थी। हर बच्चे के पास एक संरचना होती थी। वे अपने पेड़ के लिए एक संरचना की कल्पना कर लेते थे और विभिन्न सब्जियों की संरचनाओं और रंगों का इस्तेमाल करते हुए उस संरचना को कागज पर बनाते थे। जब सब चित्र पूरे हो जाते थे तब मैं उन्हें एक बड़ी दीवार पर लगा देती थी और हमारे पास उन संरचनाओं का 'जंगल' हो जाता था।

इस तरह की प्रायोगिक गतिविधियों का आनन्द आगे आने वाली चीज को जानने और चीजों को क्रम से लगाने के कौशलों को निर्मित करता है।

चित्रों का उपयोग – मिलान करना तथा क्रम से जमाना

छोटे बच्चों के लिए 'लौट्टो' जैसे चित्रों का मिलान करने वाले खेल मजेदार और मूल्यवान होते हैं। यह उनके समानताओं को पहचानने वाले देखने के कौशलों को निर्मित करता है जो पढ़ने के लिए नितान्त आवश्यक होते हैं। बच्चों को समान शब्दों को पहचानने की क्षमता की जरूरत होती है, ताकि हर बार उसी शब्द के सामने आने पर उन्हें हमेशा उसे समझने की प्रक्रिया से न गुजरना पड़े। एक छोटे बच्चे के लिए चित्रों के साथ इस कौशल का अभ्यास करना आनन्ददायक और सार्थक होता है।

टेढ़े–मेढ़े कटे हुए टुकड़ों की पहेलियाँ भी भेद करने के दृश्यात्मक कौशलों को निर्मित करने के लिए मूल्यवान

होती हैं। जो बच्चे सफलतापूर्वक ऐसी पहेलियों को जमाना सीख लेते हैं, वे सीखने के दृश्यात्मक कौशलों को भी निर्मित कर लेते हैं और इसके कारण वे सभी ध्वन्यात्मक संकेतों और उनके संयोजनों में भेद कर सकेंगे जो पढ़ने के लिए आवश्यक हैं।

इसके बाद अगला चरण चित्रों की एक शृंखला – शायद शुरुआत करने के लिए तीन भिन्न चित्रों की, और फिर बढ़ाते हुए 5 या 6 चित्रों की – प्रस्तुत करने की होगी। इन तस्वीरों का उपयोग बच्चे, अकेले–अकेले या सामूहिक रूप से, एक कहानी कहने के लिए कर सकते हैं। यह घटनाओं को क्रम से पेश करने की क्षमता निर्मित करेगा, जो यदि बच्चे को स्वतंत्र रूप से पढ़कर कहानियों को समझना और उनका मजा लेना है तो उसके लिए एक अन्य महत्त्वपूर्ण कौशल है।

तस्वीरें पढ़ने की प्रारम्भिक गतिविधियों का एक बेहद जरूरी हिस्सा होती हैं। बच्चों को सभी प्रकार के चित्रों में मजा आता है। एक चित्र एक पूरी कहानी बयान कर सकता है। ऐसे चित्र से जुड़ी भाषा किताबों की भाषा होती है, और यदि बच्चे इस प्रकार की कहानी कहने में भाग लेने में समर्थ होते हैं तो वे पढ़ने के संसार के लिए अच्छी तरह तैयार किए जा रहे होते हैं।

अकसर बच्चे बहुत छोटी उम्र से ही पढ़ने का 'खेल' शुरू कर देते हैं। इसके कई रूप हो सकते हैं, लेकिन ज्यादातर इसमें कोई बच्चा एक किताब लेकर बैठ जाता है, उसके पन्नों को पलटता है, और वैसे ही उपयुक्त स्वर में कहानी 'सुनाता' है जैसा उसने बड़े लोगों को करते देखा है। कभी–कभी, जब बच्चे पढ़ने के लिए तैयार होने लगते हैं, तो वे अकसर स्वतंत्र रूप से किसी किताब के पाठ में उन ध्वनियों या शब्दों को तलाशते हैं जिनसे वे परिचित होते हैं। जब उन्हें कुछ ऐसे ध्वनि–चिन्ह मिल जाते हैं जिन्हें वे पहचानते हैं तो वे बहुत उत्साहित हो जाते हैं। यह इस बात का एक संकेत होता है कि बच्चा पढ़ने की औपचारिक गतिविधियाँ आरम्भ करने के लिए शायद अब तैयार हो चुका है।

असफलता से बचना

मैं इस बात पर जितना भी ज्यादा जोर दूँ, वह कम होगा, कि पढ़ने के पूर्व की ये सभी गतिविधियाँ बच्चों के लिए आनन्ददायक होना चाहिए। यह बेहद महत्त्वपूर्ण है कि सीखना सुखद हो और इसमें बच्चे उत्साह से भरे हों। इसमें वयस्कों की भूमिका सीखने को सुगम बनाने वालों की होना चाहिए और उन्हें बच्चों से अपनी अपेक्षाएँ धीरे–धीरे बढ़ाना चाहिए। बच्चों के सभी प्रयासों की, यहाँ तक कि कम सफल प्रयासों की भी, भरपूर प्रशंसा करना, यही बड़ों के व्यवहार का प्रमुख पहलू होना चाहिए। बीते वर्षों में मैंने पाया है कि प्रोत्साहन की दृष्टि से हम हमेशा कुछ ऐसी बात कह सकते हैं जो सकारात्मक हो। मनुष्य, चाहे वे कितने भी छोटे हों या बड़े, प्रशंसा से पनपते हैं!

पढ़ने की औपचारिक गतिविधियाँ आरम्भ करना

ध्वन्यात्मक ज्ञान विकसित करना

बच्चों को वर्णमाला के चिन्हों और उनसे निकलने वाली ध्वनियों के बीच के सम्बन्ध को जानने की जरूरत होती है। इसकी शुरुआत काफी जल्दी की जा सकती है, पर उसका तरीका अनौपचारिक, बहु–ऐन्द्रिक, और प्रायोगिक गतिविधियों के उपयोग पर ही आधारित होना चाहिए। प्रारम्भिक ध्वन्यात्मक सीखने में आनन्द का समावेश करने के बहुत से तरीके हैं। इसमें सफलता पाने में शिक्षकों की सहायता के लिए कई अच्छी योजनाएँ और कार्यक्रम उपलब्ध हैं। इनमें जो सबसे अच्छे हैं, उनमें कुछ दृश्यात्मक संकेत, एक सुनने वाला हिस्सा और इन सभी को आपस में जोड़ने वाली किसी प्रकार की गतिविधि शामिल रहते हैं। छोटे बच्चों को सिर्फ वर्णमाला के अक्षर दिखाना, उनसे सम्बन्धित ध्वनियाँ बताना और उनसे सभी को याद रखने की अपेक्षा करना, हो सकता है कि कुछ बच्चों के साथ यह तरीका काम कर जाए, पर अनेक बच्चों को प्रारम्भिक पढ़ने की सफल शुरुआत करने के लिए इससे अधिक संकेतों की जरूरत होगी।

शिक्षण के अपने कार्यकाल के दौरान, मैंने प्रारम्भिक ध्वन्यात्मक ज्ञान का परिचय करवाने की कई अलग–अलग विधियों को उपयोग किए जाते हुए देखा है। इनमें से कुछ अन्य से ज्यादा सफल हुई हैं।

स्वयं मैंने हर अक्षर के लिए एक पद रचते हुए – अत्यन्त सरल और दोहराव वाला – जिनके साथ उनसे सम्बन्धित मनोरंजक चित्र भी थे, एक गीत विकसित किया जिसका मैंने कुछ वर्षों तक बहुत सफलतापूर्वक उपयोग किया। उस समय यह बात मेरी पद्धति को भिन्न बनाती थी कि जैसे ही बच्चे गीत के हर पद को समाप्त करते थे, उन्हें

उस अक्षर की संरचना को हवा में दोहराने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। यह कई तरीकों से मदद करता था :

- इससे बच्चों को यह कल्पना करने में मदद मिलती थी कि वह अक्षर कैसा दिखता था।
- यह ध्वन्यात्मक सम्बन्धों को सीखने में एक गतिसंवेदी (स्पर्श) तत्व जोड़ देता था।
- इसमें बच्चों को, कारगर ढंग से पेन्सिल को नियंत्रित करने की क्षमता विकसित करने के पहले कागज पर गलत चिन्ह बनाने का जोखिम उठाए बिना ही, अक्षरों के स्वरूप निर्मित करने के अभ्यास का अवसर मिलता था।
- अक्षर किस तरह निर्मित होते हैं इससे परिचित होने से, और साथ ही साथ उनसे निकलने वाली आवाजें सीखने से, बच्चे उनमें सम्बन्ध जोड़ना सीखते हैं, और इस तरह अपने सीखने को मजबूत बनाते हैं क्योंकि इस पूरी प्रक्रिया में देखने की, सुनने की और गतिसंवेदी गतिविधियाँ शामिल रहती हैं।
- कम उम्र की अवस्था से वर्णमाला के सभी अक्षरों को बनाने का सही तरीका जानने से न केवल लिखावट की दृष्टि से, बल्कि भविष्य में हिज्जे करना सीखने के लिए भी बड़े लाभ मिलते हैं।

अब मैं शिक्षण से अवकाश प्राप्त कर चुकी हूँ, पर पढ़ना सीखने के महत्त्व को लेकर मेरी जोशीली प्रतिबद्धता बरकरार है। मेरी बेटी आयरलैण्ड के एक दूरदराज के इलाके में रहती है और उसके चार बच्चे हैं। जब उसके सबसे छोटे दो बच्चे स्कूल जाने की उम्र के हुए तो उसने और उसके पति ने निर्णय लिया कि वे चारों बच्चों को घर पर ही पढ़ाएँगे। वह मेरे 'ऐल्फाबेट गीत' को सुनते हुए बड़ी हुई थी और उसे स्वाभाविक मानकर उसने उसका मूल्यांकन नहीं किया था। जब उसने उसे स्वयं अपने बच्चों के लिए उनके गृह शिक्षा कार्यक्रम में उसका उपयोग करना शुरू किया तब उसे एहसास हुआ कि वह कितना कारगर है। उसने मुझे उसको प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित किया मैंने उसकी सलाह मान ली और मैं आशा करती हूँ कि यह उन परिवारों के लिए, जो घर पर अपने बच्चों की मदद करने का प्रयास करते हैं, और वास्तव में छोटे बच्चों को विविध प्रकार के परिवेशों में शिक्षा देने वाले अन्य लोगों के लिए भी उपयोगी हो सकेगा (www.pre-school-phonics.co.uk)। इसके चित्रों को मेरे पति ने, जो एक कलाकार हैं, बहुत सक्रिय हास्यमय अन्दाज में फिर से बनाया है! मैंने एक कहानी लिखी है जिसमें ऐल्फाबेट के सभी अक्षरों को पिरोया गया है और जो चित्रों और गीत से जुड़ी हुई है। उसके पैक डिब्बे में एक श्रव्य सीडी भी शामिल है जिसमें पूरी कहानी और गीत दिए गए हैं।

हमारी 'ऐल्फाबेट्टा' विधि बहुत छोटे बच्चों के लिए उपयोगी है जिन्हें अक्षरों की अलग–अलग तस्वीरों में और उनसे जुड़े हुए गीत के सरल पदों में आनन्द आता है। इसे बड़े बच्चों के साथ, जिन्हें कहानी के पाठ में और अधिक ध्वनि सम्बन्धों को खोजने में मजा आता है, भी उपयोग किया जा सकता है। मेरी अपनी बेटी के बच्चे अभी भी गीत के और नए हास्यमय पद, जो अकसर वाकई में बहुत मनोरंजक होते हैं, रचने का मजा लेते रहते हैं!

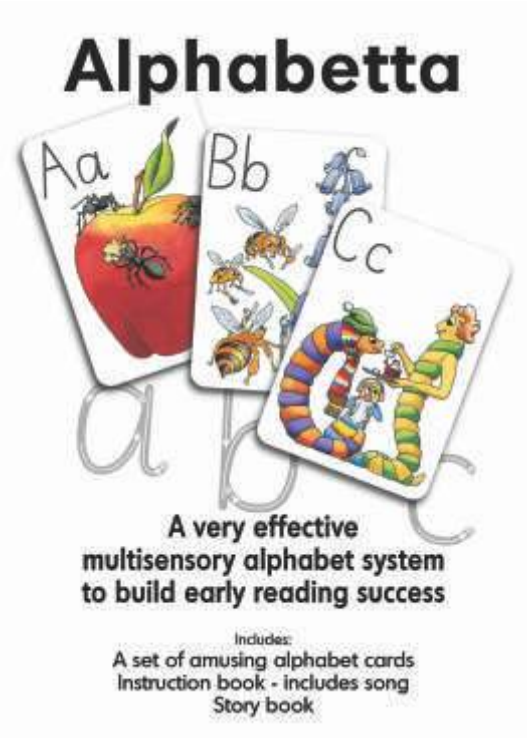

सीखने के सहायक उपाय के रूप में अक्षरों का निर्माण

जब बच्चों का प्रत्येक अक्षर की ध्वनि से परिचय करवाया जाता है, तब उसका जो भी तरीका चुना जाए, सीखने को सशक्त बनाने का एक बहुत उपयोगी उपाय यह है कि अक्षर से उत्पन्न होने वाली ध्वनि सिखाते समय ही उसके स्वरूप की रचना भी सिखाई जाए, जैसा कि ऊपर के

अनुच्छेद में समझाया गया है। अँग्रेजी की वर्णमाला सिखाते समय यह महत्त्वपूर्ण है कि शुरुआती चरणों में छोटी लिपि वाले अक्षरों (लोअर केस लैटर्स) पर ध्यान केन्द्रित किया जाए। बड़ी लिपि वाले अक्षरों (कैपिटल लैटर्स) के वैसे भी जाने–पहचाने होने की सम्भावना रहती है क्योंकि वे संकेतों में, चीजों के आवरणों पर और कम्प्यूटर के की–बोर्ड (कुंजी पटल) पर बने रहते हैं। बड़ी लिपि के अक्षरों को बनाना सरल होता है क्योंकि उनकी रचना में कई सीधी रेखाएँ होती हैं। परन्तु, किसी भी पाठ का अधिकांश हिस्सा छोटी लिपि के अक्षरों से बना होता है। हालाँकि आधुनिक दुनिया में पारम्परिक लिखावट का उतना इस्तेमाल नहीं किया जाता जितना पहले किया जाता था, फिर भी बच्चों के लिए यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि छोटी लिपि के अक्षर कैसे बनाए जाते हैं।

एक छोटे बच्चे के लिए पढ़ने के कौशल की अपेक्षा लिखने का कौशल सीखना कहीं अधिक जटिल प्रक्रिया होती है। पढ़ने में एक पेज पर बने हुए चिन्हों का अर्थ निकालना होता है, जबकि लिखने में एक कोरे पेज से शुरुआत करना और उस पर ऐसे चिन्ह बनाना निहित होता है जिनको अर्थ निकाले जाने के लिए सही होना चाहिए। इस कारण से, जब एक छोटा बच्चा पढ़ना सीखने की शुरुआत करता है, तो यह जरूरी है कि ध्यान पढ़ने पर ही केन्द्रित किया जाए, न कि उसी के साथ लिखने में भी प्रगति करने की अपेक्षा की जाए। पर, अक्षरों के स्वरूप के बनने का परिचय ऐसे बहुत ही प्रायोगिक तरीके से करवाया जा सकता है, कि वह पढ़ने की प्रारम्भिक गतिविधियों में एक सहायक उपाय हो।

सिर्फ इतना ध्यान रखें कि पढ़ने की क्षमता के बिना लिखने का कौशल अर्थहीन है।

पूरे शब्दों को पहचानना

जब बच्चे सरल शब्दों को समझने के लिए जरूरी सभी ध्वनियों को पहचान सकते हैं और उन ध्वनियों को मिलाने में समर्थ हो जाते हैं, तब आमतौर पर वे किताबों के सरल पाठ को पढ़ना शुरू कर सकते हैं।

बहुत से ऐसे शब्द होते हैं जिनकी अवयव ध्वनियों को मिलाकर उन्हें नहीं समझा जा सकता, इसलिए बच्चों को यह भी दिखाना जरूरी है कि पूरे शब्दों को उनकी संरचना से पहचानना सम्भव है। मैंने पाया है कि इस कौशल को निर्मित करना सिखाने की शुरुआत करने का एक अच्छा तरीका सही रंगों (जैसे कि लाल, नीला, हरा, पीला, आदि) में रंगीन कार्ड प्रदान करना है। ऐसी कई गतिविधियाँ रची जा सकती हैं जिनमें बच्चों को दिया गया काम पूरा करने के लिए कार्ड पर छपे शब्द का मिलान करना जरूरी होता है। शब्द के रंग में ही वह संकेत होता है जिसकी शुरुआत में बच्चों को जरूरत होती है। शीघ्र ही रंगीन शब्द कार्डों को बदलकर सामान्य शब्द कार्ड उपयोग किए जा सकते हैं जिन पर सभी शब्द काले रंग में छपे होते हैं। इस तरह की गतिविधियाँ काफी जल्दी आरम्भ की जा सकती हैं, और जब तक उनको ऐसे विविध रूपों में दोहराया जाता रहेगा जो बहुत जटिल न हों, तब तक बच्चों को मजा आता रहेगा और पूरे शब्दों को पहचानने का कौशल बहुत स्वाभाविक तरीके से निर्मित होगा।

जब बच्चे पाठ में से परिचित शब्दों को पहचानने में समर्थ हो जाते हैं, तो शायद सरल किताबों को पढ़ने के लिए वे तैयार हो चुके होते हैं।

प्रारम्भिक किताबें और कहानियाँ चुनने का अधिकार

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, पढ़ने में बच्चों की मदद करने का एक महत्त्वपूर्ण अंग बहुत कम उम्र से एक सुरक्षित और गैर–निर्णयात्मक वातावरण में किताबों का आनन्द लेने में उनकी सहायता करना है। यह तरीका बच्चों के विकसित और परिपक्व होने के साथ जारी रहना चाहिए।

माता–पिताओं द्वारा मुझसे कही गई बातों में से कभी–कभी एक यह होती थी : 'मैंने उसकी पढ़ने की किताब में चित्र को यह देखने के लिए ढँक दिया कि उसके बिना वह पढ़ सकती थी या नहीं, और वह नहीं पढ़ सकी, यानी कि वह पढ़ नहीं रही है!'

मैंने हमेशा यह समझाने की कोशिश की कि शुरुआत में बच्चों को पाठ का मतलब समझने में सहायता के लिए संकेतों की जरूरत होती है। प्रारम्भिक पढ़ने की किताबों में हमेशा चित्र होते हैं, और वे बच्चों को कहानी के बारे में संकेत देने में और उनके आनन्द को बढ़ाने में मदद करने के लिए होते हैं। यदि चित्र के दृश्यात्मक सहारे के बिना पाठ का अर्थ निकालने के लिए बच्चे पर दबाव डाला जाता है तो पूरी प्रक्रिया के कम आनन्ददायक और वास्तव में तनावपूर्ण बन जाने की सम्भावना रहती है। क्या इसके आगे भी मुझे कुछ कहने की जरूरत है?

मैं दृढ़तापूर्वक यह मानती हूँ कि समझ के साथ पढ़ना एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें कई कौशल शामिल रहते हैं। आधुनिक दृष्टिकोण अन्य सभी की अपेक्षा ध्वनियों पर सबसे अधिक जोर देता है। मैं मानती हूँ कि ध्वन्यात्मक बोध आवश्यक कौशलों में से एक है। आगे आने वाली चीजों का अनुमान लगाने के कौशल और पाठ के संकेत तथा चित्र, सभी समझने में, जो आनन्द के लिए नितान्त आवश्यक है, सहायक होते हैं।

अब प्रारम्भिक पढ़ने की अनेक बहुत अच्छी योजनाएँ उपलब्ध हैं और इस मामले में हम भाग्यशाली हैं। बीते हुए वर्षों में प्रारम्भिक पढ़ने की अच्छी सामग्री की उपलब्धता बहुत सीमित थी।

आज उपलब्ध सर्वोत्तम योजनाओं में से अनेक में पढ़ने के हर स्तर पर कुछ चुनी हुई पुस्तकों की सूची होती है। इसका मतलब यह है कि प्रत्येक स्तर पर दी गई किताबों को क्रम से पढ़ना जरूरी नहीं है, बल्कि बच्चे अपना निजी चुनाव कर सकते हैं कि वे कौन सी किताबें पढ़ना चाहेंगे। यह एक शानदार सुविधा है, जो एकदम शुरुआत से ही उपलब्ध होना चाहिए। मेरे अनुभव में, छोटे बच्चों को पढ़ने की सामग्री का खुद चुनाव करने में जो आनन्द मिलता है वह उनके उत्साह और आत्म–गौरव को बढ़ाता है।

यदि इस व्यवस्था को अच्छी तरह काम करना है तो उसके लिए इसमें शामिल वयस्क लोगों को तैयारी करना आवश्यक है। जो बच्चे पढ़ना शुरू ही कर रहे हैं उनके लिए प्रथम स्तर की सभी किताबों से परिचित होना बेहतर होता है।

इसे निम्न प्रकार से हासिल किया जा सकता है:

- शिक्षक–वयस्क व्यक्ति एक बार में एक किताब ले सकता है और उसे बच्चों के एक समूह के साथ साझा कर सकता है।
- किताब के आवरण तथा शीर्षक को देखें। आप किताब के पहले पेज को देखकर लेखक और चित्रकार के बारे में जो कुछ पता कर सकें उसकी चर्चा करें।
- बच्चों से यह अनुमान लगाने के लिए कहा जा सकता है कि उनके ख्याल से आगे क्या होगा, उसके बाद पन्ने पलटकर यह देखना कि क्या उनका अनुमान सही है या कहानी के अन्त में कुछ अप्रत्याशित होता है।
- शिक्षक–वयस्क व्यक्ति को फिर कहानी का पाठ करना और उसे भाव के साथ कैसे पढ़ा जा सकता है इसका अभिनय करना चाहिए। जब वयस्क व्यक्ति पढ़ रहा हो तो बच्चों को पाठ को देखने और समझने में समर्थ होना चाहिए।
- विभिन्न विराम–चिन्हों की और वे कहानी के पढ़ने के ढंग को किस तरह संचालित करते हैं इसकी प्रारम्भिक चर्चा की जा सकती है।
- कहानी में बड़ी लिपि के अक्षरों के उपयोग की भी चर्चा की जा सकती है।
- बच्चों के वास्तव में स्वतंत्र रूप से किताबों को पढ़ना शुरू करने से पहले यदि किसी भी पढ़ने की योजना के प्रारम्भिक स्तरों पर प्रत्येक पुस्तक का ऐसा परिचय दिया जाए, तो वे किताबों का खुद चुनाव करने के लिए अच्छी तरह तैयार हो जाएँगे। वे कहानियों के पात्रों तथा घटनाओं से परिचित हो जाएँगे। यदि अन्य सभी तैयारियाँ भी साथ चलती रहें, तो स्वतंत्र रूप से पढ़ने और उस अनुभव का आनन्द लेने के लिए, वे ध्वनियों को समझने के कौशलों, शब्दों की याद करने, आगे की घटनाओं का अनुमान लगाने और क्रम से जमाने, इस सब का उपयोग करने में समर्थ हो जाएँगे।

पुनरावृत्ति का महत्त्व

अनेक छोटे बच्चों को, जिन्होंने स्वतंत्र रूप से पढ़ना बस शुरू ही किया होता है, किसी मनपसन्द किताब को कई बार फिर से पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। उन्हें ऐसा करने की छूट देना महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि यह प्रारम्भिक पढ़ने की प्रक्रिया में सीखे हुए को मजबूत बनाने तथा आनन्द लेने में मददगार होता है।

इस प्रक्रिया में माता–पिताओं, परिवार के सदस्यों तथा शिक्षकों की भी सतत चलने वाली भूमिका रहती है। बच्चों के स्वतंत्र रूप से पढ़ना शुरू करने से पहले और उनके पढ़ने में सक्षम बन जाने के बाद, दोनों स्थितियों में वयस्क लोगों द्वारा उनके लिए किए जा सकने वाले सबसे महत्त्वपूर्ण कामों में से एक उनको पढ़कर सुनाना जारी रखना है।

जब कोई वयस्क एक बच्चे के लिए पढ़ता है तो बच्चे को अपने बगल में बिठाना मूल्यवान होता है। तब वयस्क व्यक्ति जैसे–जैसे आगे पढ़ता है, उसके साथ बच्चे को पाठ का अनुसरण करने का अवसर मिलता है। कुछ बच्चे स्वाभाविक रूप से ऐसा करेंगे और सम्भावना है कि उनका साहित्य तथा लिखित शब्द के प्रति गहरा लगाव बन जाएगा। अन्य बच्चे जो सहज रूप से पाठ का अनुसरण नहीं करते, उनको भी लाभ होगा, वे आम तौर पर कुछ पाठ में रुचि लेंगे और कहानी में खो जाएँगे।

आनन्द लेने के लिए विस्मित करने वाला काफी साहित्य उपलब्ध है, और यदि वयस्क लोग पढ़कर सुनाने के द्वारा बच्चों के उसे खोज लेने मदद कर सकते हैं, तो वह सभी के लिए लाभदायक अनुभव होगा।

बच्चों को पढ़कर सुनाने के लिए चुनी जाने वाली पुस्तकें उनसे थोड़े आगे के स्तर की होना चाहिए जिन्हें वे स्वतंत्र रूप से पढ़ने में समर्थ हैं। इसका मतलब है कि जैसे–जैसे बच्चे अपने पढ़ने में प्रगति करते हैं, वे फिर से परिचित पाठों की ओर लौट सकेंगे और उनके पढ़ने का निरन्तर विस्तार होता रहेगा।

निष्कर्ष

पढ़ने के कौशलों को सुगम बनाने में सहायता करना सचमुच सौभाग्य की बात है। यह बच्चों को कहानियों की तथा सीखने और समझ की जादुई दुनिया की चाबियाँ थमाने जैसा है। हर मनुष्य यह चाबी और उसे इस्तेमाल करने के तरीके का ज्ञान दिए जाने का पात्र होता है।

रिया बाजेली ने लन्दन के एक अति वंचित हिस्से में स्थित हाई स्कूल में 1970 में अपना शिक्षण कार्य आरम्भ किया था। वे आदर्शवादी थीं और जल्दी ही उन्हें एहसास हुआ कि बच्चों के जीवन में वास्तविक अन्तर लाने के लिए उनको छोटे विद्यार्थियों के साथ काम करने की जरूरत थी। वे 1972 में शिशुओं के एक स्कूल में चली गईं और वहीं उन्हें बच्चों को पढ़ना सिखाने की अपनी गहरी लालसा का अनुभव हुआ। शिक्षण के उनके कार्यकाल में प्रारम्भिक वर्षों की शिक्षा में उनकी दिलचस्पी जारी रही और वे उस क्षेत्र की एक अनुभवी विशेषज्ञ बन गईं। जब 1983 में वे प्रमुख शिक्षक बन गईं तो सेवाकार्य के दौरान दिए जाने वाले प्रशिक्षण और बैठकों तथा सम्मेलनों में अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से वे अपनी दिलचस्पी और विशेष ज्ञान को दूसरों को बाँटने में समर्थ हुईं। अब सेवानिवृत्ति के बाद वे गृह–शिक्षा तथा पूर्व–स्कूल समूहों, तथा एक वयस्क साक्षरता संगठन को लगातार सहयोग देती हैं, और उन्होंने पूर्व–स्कूल ध्वन्यात्मक ज्ञान के लिए एक संकलन (पैक) प्रकाशित किया है (www.pre-school-phonics.co.uk)। इन दिनों वे सभी आयु वर्गों के लिए उपयुक्त एक ध्वन्यात्मक व्यवस्था पर काम कर रही हैं। वे कलाकार क्रिस्टोफर बाजेली से विवाहित हैं (www.chrisbazeley.com)। उनकी दो सन्तानें तथा छह पोते–पोतियाँ, नाती–नातिनें हैं। उनसे rheabazeley@fastmail.fm पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : भरत त्रिपाठी